प्रातः क्लास 8-8-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। शिव भगवानुवाचः जब शिव भगवानुवाच कहा जाता है तो समझ जाना चाहिए एक शिव ही भगवान वा परमपिता है। उनको ही तुम बच्चे वा आत्मा याद करते हो। परिचय तो मिला है रचयिता बाप से। यह तो जरूर है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही बात करते होंगे। सभी एक रस तो याद नहीं करेंगे। यह बहुत सूक्ष्म बात है। अपन को आत्मा समझ दूसरे को भी आत्मा समझे यह अवस्था जमने में टाईम लगता है। वह मनुष्य लोग तो कुछ नहीं जानते। न जानने कारण सर्वव्यापी ठिक्कर भित्तर में कह देते हैं। जिस प्रकार तुम बच्चे अपन को आत्मा समझते हो, बाप को याद करते हो ऐसे और कोई याद नहीं कर सकते होंगे। कोई भी आत्मा का योग बाप से है नहीं। यह बातें है बहुत गुह्य महीन। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। मैं आत्मा हूं। कहते भी हैं हम भाई2 हैं। तो आत्मा को ही देखना चाहिए ना। यह बहुत बड़ी मंजिल है। बहुत हैं जो कब बाप को याद नहीं होंगे। बाप समझाते हैं तुम आत्मा हो। वह है परमपिता। परम आत्मा। जानते हो जैसे परम पिता सुप्रीम आत्मा है हम भी आत्मा हैं। परन्तु हम सुप्रीम नहीं हैं। बाप को तो एवर गोल्डेन एज कहेंगे। हम तो आयरन एजेड हैं। आत्मा पर मैल चढ़ी हुई है। मुख्य आत्मा की ही बात है। आत्मा ही अभी तमोप्रधान बनी है। जो सतोप्रधान थी। अभी आत्मा में ज्ञान है। ज्ञान का सागर परमात्मा को ही कहा जाता है। तुम अपन को ज्ञान सागर नहीं कहेंगे। तुम जानते हो हमको बाबा से पूरा ही ज्ञान लेना है। वह रख कर क्या करेंगे। अविनाशी ज्ञान रत्नों का धन तो बच्चों को देना है। बच्चे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार उठाने वाले हैं। जो जास्ती उठाते हैं वही अच्छी सर्विस कर सकते हैं। बाबा को ज्ञान का सागर कहा जाता है। वह भी है आत्मा। अभी आत्मा सारा ज्ञान ले रही है। जैसे वह एवर पवित्र है हम भी एवर पवित्र बनेंगे। फिर जब अपवित्रता की रिचंक भी न रहेंगी तब ऊपर चले जावेंगे। बाप याद की यात्रा का युक्ति सिखलाते हैं। यह तो जानते हैं सारा दिन भूल जाते हैं। यहां तो तुम बच्चों को बाप सम्मुख बैठ समझाते हैं। और बच्चे तो सम्मुख नहीं सुनते। वह पढ़ते हैं। यहां तुम सम्मुख सुनते हो। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो और ज्ञान भी धारण करो। हमको बाबा जैसा सम्पूर्ण ज्ञान का सागर बनना ही है। फुल नालेज समझ जावेंगे फिर बाबा को नालेज से खाली कर देंगे। फिर शांत हो जावेंगे। ऐसे नहीं उनके अन्दर ज्ञान टपकता होगा। सभी कुछ दे दिया फिर उनका पार्ट रहा सायलेन्स का। जैसे तुम सायलेन्स में रहेंगे ज्ञान थोड़ा ही टपकेगा। यह भी बाप ने समझाया है संस्कार आत्मा ले जाती है। जैसे कोई सन्यासी की आत्मा होगी तो छोटे-पन में ही उनको शास्त्र कंठ हो जावेंगे। फिर उनका बहुत नाम हो जाता है। अभी तो तुम आते हो नई दुनिया में। वहां तो ज्ञान के संस्कार नहीं ले आ सकते। यह संस्कार मर्ज हो जाती है। बाकी आत्मा को अपनी सीट लेनी है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। फिर तुम्हें शरीरों पर नाम पड़ते हैं। शिव बाबा तो है ही निराकार। उनका नाम शिव ही चलता है। अभी तुमको सुनाते भी हैं निराकार। कहते हैं मैं इन आरगन्स का लोन लेता हूं। वह तो सिर्फ सुनाने ही आते हैं। वह कब सुनेगा नहीं। क्योंकि ज्ञान का सागर है ना। सिर्फ मुख द्वारा ही वह मुख्य काम करते हैं। आते ही हैं सभी को रास्ता बताने। बाकी सुन कर क्या करेंगे। वह सदैव सुनाते हैं। तुम बच्चों की बुधि में है नई दुनिया तो बिल्कुल ही छोटी होगी। यह पुरानी दुनिया कितनी बड़ी है। सारी दुनिया में कितनी लाईट चलती है। लाईट द्वारा क्या2 होता है। वहां तो दुनिया ही छोटी होगी। लाईट भी थोड़े ही होंगे। जैसे कि एक छोटा गांव होगा। अभी तो कितने बड़े2 गांव हैं। वहां इतने नहीं होंगे। थोड़े मुख्य2 अच्छे2 रास्ते होंगे। 5 तत्व भी वहां सतोप्रधान बन जाते हैं। कब चंचलता नहीं करते हैं। सुखधाम हो जाता है। उसका नाम ही है हेवीन। आगे चल कर तुम जितना नजदीक आते रहेंगे समझ बुधि को पाते रहेंगे। बाप भी साक्षात्कार कराते रहेंगे। फिर उस समय लड़ाई में भी लश्कर की, अथवा ऐरोपलेन आद की दरकार न रहेगी। वह तो कहते हैं हम यहां बैठे ही सभी को खत्म कर सकते हैं। तो फिर यह ऐरोपलेन आद थोड़ी काम में आवेंगे। फिर चन्द्रमा आद में प्लाट आद देखने भी नहीं जावेंगे। यह सभी है फाल्तू-

सांयस का घमण्ड। कितना शो कर रहे हैं। ज्ञान में कितनी सायंतेन्स है। इसको ईश्वरीय जात कहते हैं। सांयस में तो हंगामा ही हंगामा है। वह शांति को जानते ही नहीं। तुम समझाते हो विश्व में शांति तो शांतिधाम में ही थी औरनई दुनिया में थी। वह है सुख धाम। अभी तो दुःख अशांति है। यह भी समझाना है तुम शान्ति चाहते हो। कब अशान्त न हो। वह है शान्तिधाम और सुखधाम में। स्वर्ग को तो सभी चाहते हैं। भारतवासी ही स्वर्ग बैकुण्ठ को याद करते हैं। वह सिर्फ शान्ति को याद करेंगे। सुख को याद कर न सके। लो नहीं कहता। सुख को तुम ही याद करते हो। इसलिए पूकारते हो हमको दुःख से लिबरेट करो। आत्मायें असल में शान्तिधाम के रहने वाली हैं। यह भी कोई जानते थोड़े ही हैं। बाप बैठ समझाते हैं दुनिया में कितने बेसमझ हैं। तुम भी बेसमझ थे। कब से बेसमझ बने? 16 कला से 14 कला 12 कला बनते माना बेसमझ बनते जाते। अभी कोई कला न रही है। मौत ही मौत है। सभी तरफ। कान्फ्रेन्स करते रहते हैं। स्त्रीयों को दुःख क्यों देते हैं। और दुःख तो सारी दुनिया में है। अथाह दुःख है। सभी तमोप्रधान हैं। अभी विश्व में शान्ति कैसे हो। अभी तो ढेर के ढेर धर्म हैं। सारे विश्व में शान्ति तो अभी हो न सके। सुख को तो जानते ही नहीं। तुम बच्चियां बैठ समझावेंगे इस दुनिया में अनेक प्रकार के दुःख हैं। अशान्ति है। जहांसे हम आत्मायें आये हैं वह है शान्तिधाम। और जहां यह आदी सनातन देवोदेवता धर्म था, यह राज्य करते थे वह था सुखधाम। आदी सनातन हिन्दुधर्म नहीं कहेंगे। आदी माना प्राचीन। अभी अपन को हिन्दु क्यों कहते हैं। क्योंकि धर्म-भ्रष्ट, कर्म-भ्रष्ट हैं। सतयुग में तो सभी पवित्र थे। वह है ही निर्विकारी दुनिया। विकार का नाम नहीं। फर्क है ना। पहले2 तो निर्विकारीपना चाहिए। इसलिए बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों काम पर जीत पहनो। अपन को आत्मा समझो। अभी आत्मा पवित्र है। आत्मा में खाद पड़ती है तब जेवर भी ऐसे बनी है। आत्मा पवित्र तो जेवर भी पवित्र होंगी। उनको ही वायसलेस वर्ल्ड कहा जाता है। वड़ का मिसाल भी तुम दे सकते हो। सारा झाड़ खड़ा है। फाउन्डेशन है नहीं। और सभी धर्म खड़े हैं। सभी अपवित्र हैं। इनको कहा जाता है मनुष्य। वह है देवतायें। मैं मनुष्य को देवता बनाने आता हूं। पूज्य से पुजारी, फिर पुजारी से पूज्य कैसे बनते हैं सीढ़ी बिठलानी चाहिए। 84 जन्म भी मनुष्य ही लेते हैं। देवतायें ही 84 जन्म ले जब तमोप्रधान बनते हैं तो हिन्दु कह देते हैं। देवी देवता नहीं कह सकते क्योंकि पतित हैं। ड्रामा में सभी राज है ना। नहीं तो हिन्दुधर्म कोई है नहीं। आदी सनातन थे ही देवी देवतायें। यह भारत ही पवित्र था। अभी अपवित्र है तो अपन को हिन्दु कहलाते हैं। हिन्दुधर्म तो कोई ने स्थापन किया नहीं है। यह बच्चों को अच्छी रीत धारण कर समझानी है। आजकल तो इतना टाईम भी नहीं देते हैं। कम से कम आधा घंटा, घंटा दे तब पायन्ट सुनाई जाये। पायन्टस तो ढेर हैं। फिर उन में मुख्य2 पायन्टस सुनाई जाती है। पढ़ाई में भी जैसे जैसे पढ़ते जाते हैं तो फिर पहले की हल्की पढ़ाई अलफ बे आद थोड़े ही याद रहती है। वह फिर भूल जाते हैं। तुमको भी कहेंगे अभी तो तुम्हारा ज्ञान बदल गया है। और पढ़ाई में ऊपर चढ़ते जाते हैं तो पहली पढ़ाई भूलते जाते हैं ना। बाप भी हमको नित्य नई2 बातें सुनाते जाते हैं। पहले हल्की पढ़ाई थी। अभी तो बाप गुह्य गुह्य पायन्टस सुनाते जाते हैं। ज्ञान का सागर है ना। सुनाते सुनाते फिर पिछाड़ी में दो अक्षर कह देते। अलफ को समझा तो भी काफी है। अलफ को जानने से बे को जान ही लेंगे। तुम बच्चे जानते हो शिव बाबा से स्वर्ग की बादशाही का हमको वरसा मिलता है। बाप रचते ही हैं नई दुनिया। इतना सिर्फ समझाओ तो भी ठीक है। जो जास्ती ज्ञान नहीं धारण कर सकते वह ऊंच पद पा नहीं सकते। पास विथ आनर हो न सके। कर्मातीत अवस्था को पा न सके। इसमें बड़ी मेहनत चाहिए। याद की भी मेहनत है। ज्ञान भी धारण करने की मेहनत है। दोनो में होशियार हो जाये सो भी तो हो न सके। राजधानी स्थापन हो रही है। सभी नर से नारायण कैसे बनेंगे। इस गीतापाठशाला की एमआबजेक्ट तो यह है। नर से नारायण, डबल सिरताज राजाओं के राजा बनने को। यह वही गीता का ज्ञान है। वह भी कौन देते हैं यह—

तो सिवाय तुम्हारे कोई जानते ही नहीं। कृष्ण तो 84 जन्मों के अन्त में जो काला बन गया है वह फिर अभी ज्ञान सुन रहे हैं। अभी है कब्रस्तान। फिर परिस्तान होने का है। कब्रस्तान में काम चिक्षा पर बैठ काले बन जाते हैं। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी जो थे अभी सभी काले हैं। विकार में फंस सीढ़ी नीचे उतरते आये हैं। फिर पुजारी से पूज्य जरूर बनना है। सांयस वाले भी कितने होशियार होते जाते हैं। इन्वेन्शन निकालते रहते हैं। हर बात का अकल वहां से सीख कर आते हैं। वह भी पिछाड़ी में आवेंगे तो इतना ज्ञान उठा न सकेंगे। फिर वहां भी आकर के यही ईंजीनीयरींग आद का काम करते रहेंगे। राजा रानी तो बन सके। राजा राना के आगे सार्वस में रहेंगे। ऐसे ऐसे नई इनवेन्शन निकालते रहेंगे। राजा रानी बनते ही हैं सुख के लिए। वहां तो सभी को सुख मिल ही जाने का है। तो बच्चों को पुरुषार्थ पूरा करना चाहिए। फुल पास हो कर्मातीत अवस्था को पाना है। जल्दी जाने का नहीं आना चाहिए। अभी तो हम ईश्वरीय सन्तान हैं। बाप पढ़ा रहे हैं। यह है मिशन मनुष्यों को बदली करने की। जैसे बोधियों, क्रिश्चनस आद के मिशन होते हैं ना जो चेंज करते हैं। काले अफ्रीकन के मिशन नहीं होंगे। काला सीधी कौन बनेगा। अफ्रीकन हो जाये तो फिर पुनर्जन्म भी काले ही काले बन जाये। एक तो आत्मा पहले ही काली है और शरीर भी काला हो जाये ऐसे हो नहीं सकता। युरोपियन, गोरा बनने चाहेंगे। इस समय क्रिश्चन बहुत बढ़ गये हैं। बापने समझाया है क्रिश्चन और कृष्ण का रास मिलती है। इन्हों के लेन-देन का भी बहुत कनेक्शन है। जो इतनी मदद करते हैं उनकी भाषा आद को छोड़ देना यह भी एक इनसल्ट है। परन्तु है तमोप्रधान पत्थर बुधि। समझ थोड़े ही सकते हैं। सबसे तमोप्रधान है भारतवासी। वह तो आते ही हैं पीछे। न बहुत सुख न बहुत दुःख उठाते हैं। सारी इनवेन्शन वह लोग निकालते हैं। यहां भल कोशिश करते हैं परन्तु स्क्युरेट कब नहीं बना सकेंगे। बहुत ही रिश्वत आद लेते हैं। विलायत की चीज़ अच्छी होती है। आनेस्टी से बनाते हैं। यहां तो डिस-आनेस्टी है। अथाह दुःख है अनेक प्रकार का। सभी दुःख करने वाला एक बाप के सिवाय और कोई मनुष्य हो न सके। भल कितने भी कान्फ्रेन्स आद करते हैं विश्व में शान्ति हो। धक्का खाते रहते हैं। सिर्फ माताओं की दुःख की बात नहीं। यहां तो अनेक प्रकार के दुःख हैं। सारी दुनिया में झगड़ा मारा- मारी की ही बात है। पाई-पैसे की बातपर मारा मारी कर देते हैं। वहां तो दुःख की बात ही नहीं होती। यह भी हिसाब निकालना चाहिए लड़ाई कब से शुरू हो सकती है भारत में। रावण जब आते हैं तो पहले2 घर में ही लड़ाई शुरू होते हैं। जुदा2 हो जाते हैं। आपस में ही लड़ मरते हैं। अपना2 प्रावन्स अलग कर देते हैं। फिर लड़ने लग पड़ते थे। फिर बाहर वाले आते हैं। पहले ब्रिटीश थोड़ेई थी। फिर वह आकर बीच में रिश्वत आद दे अपना कर देते हैं। तो कितना रात दिन का फर्क है। आधा कल्प है, आधाकल्प है रात। नया कोई यह समझ न सके। नई नालेज है ना। जो फिर प्रायः लोप हो जाती है। बाप नालेज देते हैं फिर वह प्रायः लोप हो जाती है। यह एक ही पढ़ाई एक ही बार बाप से मिलती है। आगे चल तुम सभी को साक्षात्कार होती रहेंगी। कि तुम यह बनेंगे। परन्तु उस समय कर ही क्या सकेंगे। उन्नति को पा न सकेंगे। रिजल्ट निकल चूकी फिर तो ट्रान्सफर होने की बात हो जावेंगी। फिर रोयेंगे- पीटेंगे। हम तो बदली हो जावेंगे नई दुनिया के लिए। तुम लोग मुहनत करते रहते हो जल्दी आवाज़ निकल जाये फिर आपे ही सेन्टर्स पर भागते रहेंगे। परन्तु जितना देर होते जायेंगे टू लेट होते रहेंगे। फिर कुछ भी जमा नहीं होगा। पैसे की भी दरकार नहीं रहेंगी। तुमको समझाने लिए यह बैज ही काफी है। यह ब्रह्मा से विष्णु, विष्णु से ब्रह्मा। यह बैज ऐसा है जो सभी शास्त्रों का तन्त इस में है। बाबा बैज की बहुत महिमा करते हैं। वह समय आवेगा जब तुम्हारे बैजस सभी नयनों पर रखते रहेंगे। मन्मनाभव इसमें है। याद करो तो यह बनेंगे। फिर यह ही 84 जन्म लेते हैं। 84 जन्म न लेने वाला एक ही है। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी साहबज़ादों प्रिय रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।